

हिंदी असाइनमेंट

Subject Topic :- *मौलिक अधिकार*


Submitted by :- **Ritikha Sharma**

Submitted to :- **19RNS85069**

Dr. Suresh Rathod Sir.

The OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

DEPARTMENT OF HINDI



वैश्विक तापमान

पृथ्वी के सतह पर औसतन तापमान का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापमान) कहलाता है। ग्लोबल वार्मिंग मुख्य रूप से मानव प्रमुख कारकों के कारण होता है। औद्योगिकीकरण में ग्रीन हाउस गैसों का अनियंत्रित उत्सर्जन तथा जीवाश्म ईंधन का जलाना ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। ग्रीन हाउस गैस वायुमंडल में भूखंडी गैसों को वापस लाने से सौकता है यह एक प्रकार के प्रभाव है जिसे "ग्रीन हाउस गैस प्रभाव" के नाम से जाना जाता है। इसके फलस्वरूप पृथ्वी के सतह पर तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी के बढ़ते तापमान के फलस्वरूप पर्यावरण प्रभावित होता है अतः इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड के मात्रा में वृद्धि के कारण पृथ्वी के सतह पर निरंतर तापमान का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया के सभी देशों के लिए एक बड़ी समस्या है, जिसका समाधान अकारणिक शुरुआत के साथ करना चाहिए। पृथ्वी का बढ़ता तापमान विभिन्न आश्चर्यकारी घटनाओं को जन्म दे रहा है। साथ ही इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व के लिए संकट पैदा कर रहा है। यह कृत्रिम और स्वाभाविक रूप से पृथ्वी के जलवायु में परिवर्तन उत्पन्न करता है तथा इससे प्रकृति का संतुलन प्रभावित होता है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण :-

ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर समस्या बन गई है जिस पर अविभाजित ध्यान देने की आवश्यकता है। यह किसे एक कारण से नहीं बल्कि कई कारणों से हो रहा है। ये कारण प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों हैं। प्राकृतिक कारणों में ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ाई शामिल है जो पृथ्वी से अंतरिक्ष में सक्षम नहीं है। जिससे तापमान में वृद्धि होती है।

इसके अलावा, ज्वालामुखी विस्फोट भी ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार हैं। यह कहना है कि, इन विस्फोटों से कार्बन डाइऑक्साइड का एक निष्कासन है। जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करते हैं। इसी तरह, मीथेन भी ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार एक बड़ा गुहा है।

इसके साथ, ऑटोमोबाइल और जीवाश्म इंधन के औद्योगिक उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है। इसके अलावा, शैवाल और पशु पालन जैसी गतिविधियाँ पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक हैं। अक्सर, आग मुद्दों में से एक है जो तेजी से हो रहा है जंगलों को कटाई।

इसलिए, जब कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण के सबसे बड़े स्रोतों में से एक को गायब हो जाएगा, तो गैस का विनिर्मित करने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा। इस प्रकार, यह ग्लोबल वार्मिंग में परिणाम देगा। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने और धीरे-धीरे को फिर से बेहतर बनाने के लिए तुरंत कदम उठाने ज़रूरी है।

ग्रीनहाउस प्रभाव क्या है?

उदाहरण के लिए, जब आप खरीदारी करने जाते हैं, तो आपने कंपेंड की शेली ले ली। रात को कदम ली आप ठंडा सकते हैं। वह है बिजली के उपयोग को सीमित करना जो कार्बन डाइऑक्साइड को रिहाई को रोक देगा। सरकार के दृष्टि पर, उन्हें औद्योगिक कार्य को नियंत्रित करना चाहिए और उन्हें हवा में हानिकारक गैसों को बाहर निकालने से रोकना चाहिए। वनों की कटाई को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अंश में, हम अभी को इस तरह को रहस्य होना चाहिए कि हमारी पृथ्वी ठीक नहीं है। इसको इलाज करने की जरूरत है और हम इस ठीक करने में मदद कर सकते हैं। वर्तमान पीढ़ी को भविष्य की पीढ़ियों को पृथ्वी को रोकने के लिए ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इसीलिए, हर छोटा कदम, कोई एक नहीं पड़ता कि कैसे छोटा चलन बहुत बहुत बहन करता है और ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में काफी महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार के ग्लोबल वार्मिंग के विभिन्न कारण हैं। प्राकृतिक रूप से ग्रीनहाउस गैस, ज्वालामुखी, विस्फोट, मीथेन गैस और बहुत कुछ शामिल हैं। अगला, मानव निर्मित कारण वनों की कटाई, खनन, मवेशी पालन, जीवाश्म ईंधन जलाना और अधिक हैं।

ग्लोबल वार्मिंग को धीमे और सरकार के संयुक्त प्रयास से रोकना जा सकता है। वनों की कटाई पर रोक लगाई जानी चाहिए और पड़ोस को अधिक लगाया जाना चाहिए।

उत्पत्ति का उपयोग सीमित होना चाहिए और जीवाश्म को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा :-

पृथ्वी वातावरण में तापमान के लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ :-

पृथ्वी के निकट स्थित हवाइ और महासागर की औसत तापमान में बीसवीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है। पृथ्वी की सतह के निकट विश्व की वायु के औसत तापमान में 2500 वर्षों के दौरान 0.74 फ़ारेनहाइट (0.4 डिग्री सेल्सियस) (1.83 फ़ारेनहाइट 0.32 डिग्री सेल्सियस)।

ग्लोबल वार्मिंग का प्राकृतिक कारण :-

ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैस है। ग्रीनहाउस गैस के गैस होते हैं जो बाहर से मिल रही गीले या ठंडा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है जिसे हम जीवित प्राणी अपने श्वास के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी में वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है कार्बन डाइऑक्साइड, वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन इसी तरह चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में हमारे पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत

घातक होंगे दुनिया के कई हिस्सों में बर्फ की चादर बिछी जाएगी,

समुद्र का जलस्तर बढ़ जाएगा, समुद्र की इस तरह जलस्तर बढ़ने से दुनिया के कई हिस्से जल में लीन हो जाएंगे और तबाही मचेगी यह किसी विश्वयुद्ध या किसी "रास्ट्रोयड" के प्रहरी से कमरे में होने वाली तबाही से भी ज्यादा भयानक तबाही होगी। यह हमारे पृथ्वी के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध होगा।



मानव निर्माण का सजीव कारण:-

मानव निर्माण के लिए निर्देशांक आदिवासी कारक मानव के द्वारा किए गए निर्मित कार्य कार्य जिसका परिणाम विनाशकारी है। मानव विकास और प्रगति की अंधी दौड़ में प्रकृति से दूर होता जा रहा है।

नदियों की धाराओं को अवरोध किया जा रहा है हमारे खुशी और संसाधनों को बर्बाद करने के लिए पैव और जंगलों को नष्ट किया जा रहा है।

उद्योगिक क्रांति की वजह से कोयला, तेल, और कच्चा पत्थरों के चलन की वजह से बहुत प्रदूषण हो रहा है जिससे हमारे पृथ्वी असामान्य से गर्म होती जा रही है।

मानव द्वारा निर्मित लगभग वर्गों के अन्य कारण :-

- (1) वनों की कटाई,
- (2) औद्योगिकरण
- (3) शहरीकरण
- (4) पैदल का कारनामा
- (5) मानव के विभिन्न क्रियाएं।
- (6) हानिकारक योगकों के वृद्धि।
- (7) रसायनिक ईंधनों का उपयोग।

लगभग वर्गों का एक कारण विकसित देश :-

लगभग वर्गों का एक कारण विकसित देश है इसका रवैया लगातार व्यर्थता उत्पन्न करता है अतः शून्य अमेरिका और बहुत से अन्य विकसित देश इस समस्या के लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं क्योंकि विकसित देशों की अपेक्षा उनके देश की कार्बन उत्सर्जन की प्रति दर 10 गुना अधिक है लेकिन अपना और औद्योगिक प्रकृति बनाए रखने के लिए कार्बन अपना उत्सर्जन में कटौती करने की इच्छा नहीं है। वहीं दूसरी ओर भारत, चीन, जपान जैसे विकसित देशों का मानना है कि वह भी विकास की प्रक्रिया में है, इसलिए वह कार्बन उत्सर्जन को कम करने का शर्त नहीं अपना सकते हैं। इसलिए विकसित देशों को भी थोड़ा सामंजस्य बनाकर अपने ध्वनी की सुरक्षा समझ कर कार्य करना चाहिए।

उत्पादन क्षमता का अभाव :-

सरकारी एजेंसियाँ, व्यवसाय प्रधान, निजी क्षेत्र, NGOs
आदि द्वारा बहुत से कार्यक्रम, उत्पादन क्षमता का काम करने
के लिए चलाने तथा क्रियान्वित किए जा रहे हैं।

उत्पादन क्षमता के बढ़ने से पहचानें वाले क्षेत्र में कुछ
वृद्धि देखी है।

(वर्क की चहानों का पिछला)।

जैसे किसी भी समाधान के माध्यम से पुनः प्राप्त
नहीं किया जा सकता है। जो भी हो रहा है, अपना नहीं
चुपचाप और अपनी बेहतर प्रयास करना चाहिए। उत्पादन
क्षमता के प्रभाव को काम करने के लिए।

हमें ग्रीन हाउस गैस का उत्पन्न काम करना चाहिए
तथा वातावरण में हो रहे कुछ जलवायु परिवर्तन को
बर्षों से चला आ रहा है।

उन्हें अपने की कोशिश करनी चाहिए।

निष्कर्ष :-

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जीवन पर खतरा बढ़ता जा रहा है। हमें इसके लिए तुरंत कार्रवाई का त्याग करना चाहिए क्योंकि यह CO_2 के स्तर में वृद्धि कर रहा है और ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव के वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। हमें पेड़ों की अट्ठाधुन कटाई पर रोक लगायें। चाहिए, बिजली का उपयोग कम करना चाहिए, लकड़ों को जलाना बंद करना चाहिए आदि।

हवा से कार्बन डाइऑक्साइड, हवा का रक्त मुख्य स्रोत पैड है। तथा पर्यावरण अनुमान बनाने रखने के लिए हमें जल की कटाई पर रोक लगाना चाहिए तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा वृक्षारोपण किया जाना चाहिए यह जलवायु परिवर्तन के स्तर में उत्पन्न की जा सकती है। जंगलों में वृद्धि पर नियंत्रण तथा विनाशकारी प्रादुर्भावों का काम उपयोग की रोक अच्छी पड़ती है, जलवायु परिवर्तन नियंत्रण के लिए।

जलवायु परिवर्तन काम करने के उपाय, हमें बिजली के बचत पर अच्छे ठोस ठोस और ठोस, पवन, ठोस तथा सौर ऊर्जा ठोस द्वारा उत्पन्न ठोस का उपयोग करना चाहिए। कारखानों, घरों के जलाने के स्तर को कम करना चाहिए, प्लास्टिक और अन्य विप्लव उपकरणों का उपयोग कम करना इससे जलवायु परिवर्तन का स्तर काफी कम हो सकता है।